विनोबा भावे विश्वविद्यालय

हजारीबाग (झारखण्ड)

पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) – 2020

स्नातक हिंदी (FYUGP)

रूचि आधारित साख पद्धति

(CBCS)

सामान्य निर्देश / अंक विभाजन

क्रेडिट – 06 कुल अंक–100

1. प्रश्नोत्तर की अवधि तीन घंटे की होगी।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरीय एवं दीर्घउत्तरीय, प्रकार के होंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा।
4. दिये गये खंड 'क' से दो लघूत्तरीय प्रश्न के उत्तर अपेक्षित हैं।
5. दिये गये खंड 'ख' से चार दीर्घउत्तरीय प्रश्न के उत्तर अपेक्षित हैं।

खंड क (अनिवार्य) –	01 X 05 =	05 अंक
खंड क –	05 X 02 =	10 अंक
खंड ख –	15 X 04 =	60 अंक
		75 अंक
दो आंतरिक लिखित परीक्षा –		15 अंक
सतत मूल्यांकन सह उपस्थिति –		10 अंक
	कुल –	100 अंक

विशेष – दोनों आंतरिक परीक्षाओं में से विद्यार्थी जिस परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करेंगे वही अंक उन विद्यार्थियों का वास्तविक अंक होगा तथा उसे ही परीक्षा परिणाम में जोड़ा जाय।

द्वितीय– समसत्र (Second Semester)

प्रमुख (MAJOR) द्वितीय–पत्र – 02. हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल – रचनाएँ व इतिहास

कोड – MJ - 2

पूर्णांक – 100	
अंक	उत्तीर्णांक
वाह्य – 75	30
आंतरिक – 25	10

क्रेडिट – 06 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों को भारतवर्ष की 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य आदि का ज्ञान होगा ।
- इस काल के साहित्यकार और उनकी रचनाओं से वे परिचित हो सकेंगे ।
- इस काल के साहित्य का भावात्मक और राजसत्तात्मक प्रभाव का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- इससे सृजन के काव्य रूप का ज्ञान प्राप्त होगा ।
- इससे साहित्य सृजन के आधार हिंदी भाषा और मौलिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा ।

प्रस्तावित संरचना –

- उत्तर मध्यकाल नामकरण।
- रीतिकालीन परिस्थितियाँ।
- रीतिकालीन काव्य भाषा।
- रीतिबद्ध काव्य की प्रवृत्तियाँ।
- रीतिमुक्त काव्य की प्रवृत्तियाँ।
- रीतिकालीन भक्ति का स्वरूप।
  (बिहारी–सतसई के दोहे,मतिराम–कुंदन को रंग,क्यों इन आंखिन,सेनापति–सारंग धुनि सुनावै,देखत न पीछै कौं भूषण–इंद्र जिमि जंभ,भुज भुजगेस की,साजि चतुरंग बीर रंग में,घनानंद–कवित्त)

सहायक ग्रंथ –

- हिंदी में श्रृंगार परम्परा और महाकवि बिहारी –डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त।
- बिहारी का नवमूल्यांकन – डॉ. बच्चन सिंह।
- देव और बिहारी – कृष्ण बिहारी मिश्र।
- बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।
- घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहरलाल गौड़।
- भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन – भगवानदास तिवारी।
- भूषण – राजमल बोरा।
- रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन – राजकुमार वर्मा।
- रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेंद्र ।
- हिन्दी विभा–डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता